किसानों एवं समाज के विभिन्न वर्गों हेतु महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ0 मीनाक्षी नेगी*
डॉ0 नीता बोरा शर्मा**

सारांश :

गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव समाज के प्रत्येक वर्ग में देखने को मिलता है। उनके विचारों एवं कार्यों का ही प्रभाव है कि आज भारत के अलावा विश्व के अन्य देशों में भी उनके विचारों का प्रभाव देखने को मिलता है। जिन बुराईयों के निवारण की बात आज सरकार एवं समाज के द्वारा की जाती है वह गाँधीजी ने अपने दौर में ही उसकी बात की थी। शोध पत्र में विवरणात्मक एवं विश्लेशणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में किसान एवं समाज के विभिन्न वर्गों के लिए गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता को उजागर करने का प्रयास किया है।

प्रस्तावना :

आज संपूर्ण विश्व आधुनिकता की दौड़ में है और विश्व का प्रत्येक राष्ट्र स्वयं को इस दौड़ में सबसे आगे देखना चाहता है। वर्तमान में भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण सबसे प्रचलित शब्द है यह एक ऐसी स्थिति को उजागर करती है जिसमें सम्पूर्ण विश्व समाज को एक परिवार के रूप में देखा जाता है। इसमें लाइसेन्स मुक्त आर्थिक व्यवस्था पर बल दिया जाता है। विदेशी पूँजी के मुक्त प्रवाह की अनुमति, सेवा क्षेत्र विशेषकर बैंकिंग, बीमा तथा जहाजरानी क्षेत्रों में विदेशी पूँजी के निवेश की छूट तथा रुपये को पूर्ण परिवर्तन प्रदान करना इत्यादि इसमें सम्मिलित हैं।

भारतीय विकासवादी समाज में गांधीवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसका प्रयोग शायद ही जीवन के किसी क्षेत्र से अछूता हो। उनके विचारों की प्रासंगिकता इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत दौरे के दौरान कहा कि यदि गांधीजी नहीं होते तो मैं अमेरिका का राष्ट्रपति नहीं होता। गांधीजी के विषय में डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है, **''ऐसे संसार में जो घृणा में प्रमन्त है सद्भावहीनता के कारण खण्डित है। गांधी प्रेम और सद्भावना के अमर प्रतीक हैं वह इतिहास में युग–युगों से जुड़े हैं।''** स्वयं गांधीजी के अनुसार **''जब भी मुझे निराशा होती है तो गीता मेरा सहारा बनती है।''** गांधीजी ने राजनीति का आध्यात्मीकरण करने की बात कही थी। राजनीति में व्याप्त बुराइयो का नाश इसके द्वारा किया जा सकता है। कई राजनेता वर्तमान में आध्यात्मिक मार्गो से जुड़कर लोगों को जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। आध्यात्मिकता कई समस्याओं का शान्तिपूर्ण समाधान प्रदान करती है।

भारत गांवों का देश एवं कृषि प्रधान देश है, इसलिए गांधी जी ने ग्राम स्वराज व रामराज की बात कही थी। भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत भाग गांवों में ही निवास करता हैं और इन गांवों की जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है। उन्हीं के व्यक्तित्व व विचारों का प्रभाव रहा है कि गांधीजी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर को 1959 मे राजस्थान के नागौर जिले में पंचायतीराज व्यवस्था का शुभारम्भ किया गया। ग्रामीण विकास की अनिवार्य आवश्यकताओं ने ही वर्तमान रूप में पंचायतीराज संस्थाओं को सुदृढ़ता प्रदान की है। इसका उद्देश्य स्थानीय शासन, स्थानीय लोगों के हाथ में हो। ग्रामीण लोग केवल कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में ही भाग न लें अपितु क्रियाओं में भी सक्रिय एवं सशक्त भागीदार बनें । लघु कुटीर उद्योगों की स्थापना हो लोकतन्त्र सच्चा तभी हो सकता है जब उसे देश के प्रत्येक वर्ग का शारीरिक आर्थिक एवं आध्यात्मिक सहयोग प्राप्त हो।[1] ग्रामीण विकास के जो भी कार्य किये जाते हैं उसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक पूर्ण रूप से उसमें संलग्न हों तभी इसके वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान में ग्रामीण विकास की विभिन्न परियोजनाओं को ग्रामीण विकास का केन्द्र मानकर ही निर्मित एवं कार्यान्वित किया जा रहा है जिससे कि अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी को बल प्राप्त हो।

*अतिथि व्याख्याता राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, रामनगर।
**प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर नैनीताल।

उन्होंने चंपारन व खेडा के किसानों की दुर्दशा देखी। वहाँ के किसान अंग्रेज प्लांटरों के लिए नील की खेती करते थे। उसके बाद गांधी जी ने अंग्रेज प्लांटरों के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया। 1937 में गांधीजी के शब्दों में ''**जमीन आज जनता की नहीं है। इससे ज्यादा सच क्या हो सकता है।.....लेकिन जमीन तथा अन्य संपत्ति उन्हीं की होती है जो मेहनत करते हैं। दुर्भाग्य से मजदूर इस सीधी–सी सच्चाई से नावाकिफ रखे गये हैं।** ''भारत में जितने भी किसान आंदोलन हुए हैं वे अवश्य ही गांधी जी से प्रभावित रहे। इसीलिए आज भी भारत की विभिन्न परियोजनाओं में उनके विचारों की छाप देखी जा सकती है।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना को पूरे देश में लागू करने की घोषणा की। अब तक यह योजना पूरे देश के 330 जिलों में लागू हुयी है।[2] अब इसका नाम महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी अधिनियम रखा गया है, क्योंकि यह पूर्णतः गांधी जी के आदर्शों पर आधारित है। गांधी जी ग्रामीण विकास को ही भारत विकास का मार्ग बताते थे। रोजगार गारन्टी भी ग्रामीण क्षेत्र के विकास हेतु प्रयासरत् है। परस्पर सहभागिता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व एवं लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के तहत इसका दायित्त्व ग्रामसभा को सौंपा गया है। इसके अन्तर्गत ग्रामीण विकास हेतु जल संरक्षण ,जल सम्भरण, वृक्षारोपण ,वन संरक्षण, सिंचाई हेतु नहरों का निर्माण, भूमि विकास आदि कार्य किये जाते हैं। इन कार्यों हेतु सम्बन्धित ग्राम के ही जॉब कार्ड प्राप्त लोगों को कार्य करने का दायित्त्व सौंपा गया है। चूँकि इस कार्य में महिलायें भी संलग्न हैं। उनके 6 वर्ष से छोटे बच्चों की देखभाल की व्यवस्था भी की जाती है।

गांधी जी का मत था कि आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण ऐसे जनतन्त्र का निर्माण करती है। जिसमें व्यक्ति की सच्ची स्वतन्त्रता रह सकती है।[3] ग्रामों को अपनी पंचायतों के कार्यों का प्रबन्ध एवं प्रशासन नियन्त्रण की अधिक से अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो। आर्थिक समानता हेतु गांधीजी ने ट्रस्टशिप का सिद्धान्त प्रशस्त किया। गरीबों के कल्याण में धन खर्च किया जाना चाहिए समाज में आर्थिक समानता आवश्यक है। तभी समाज का सर्वांगीण विकास हो सकता है। सामाजिक समानता लाने हेतु आवश्यक है, कि लोगों में आर्थिक रूप से असमानता न हो।

अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों के उत्थान के लिए उन्होंने लोगों को जगह–जगह जाकर समझाया कि अछूतपन हटाने का मुख्य उद्देश्य मनुष्य–मनुष्य के बीच व्याप्त ऊँच–नीच की निकृष्ट भावना को खत्म करना है। सभी ईश्वर की सन्तान हैं, सभी बराबर हैं, केवल वही पवित्र है जो ईश्वर का भय करता है।[4] मन्दिरों में पूजा–पाठ का अधिकार किसी वर्ग विशेष को न हो अपितु सभी इसमें बराबर के भागीदार बनें। भारतीय संविधान के अनु0–17 में अस्पृश्यता निषेध हेतु प्रावधान है। इसके अलावा जातिसूचक शब्दों के प्रयोग पर भी दण्ड की व्यवस्था की गई है। उनके अछूतोद्धार आन्दोलन से प्रभावित होकर ही भारतीय संविधान द्वारा घोषित किया गया है 'राज्य किसी नागरिक के विरूद्ध धर्म, जाति, लिंग, जन्म, स्थान या इनमें से किसी के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करेगा' प्रावधान है।[5] उनके सामाजिक कार्यक्रमों में साम्प्रदायिक एकता को प्राथमिक स्थान दिया गया था। पिछले कुछ दशकों में लोगों की मानसिकता में भी व्यापक परिवर्तन हुआ है। अब इस तरह के भेदभाव शिक्षित समाज में कम देखने को मिलते हैं। निश्चय ही यह गांधी जी के विचारों का ही प्रभाव है। गांधी जी ने अपने दर्शन में अस्पृश्यता के निवारण को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया हिन्दू समाज में प्रचलित छुआछूत की प्रथा का घोर विरोध किया।[6]

गांधी जी ने व्यक्ति के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए शारीरिक श्रम को आवश्यक माना है। प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम अपनी रोटी के लिए शारीरिक श्रम अवश्य करना चाहिए[7] ''I have heard of saint and supermen ,but have never had the pleasure of meeting them, and must confess to a feeling of scepticism about their real existence.'' Moti Lal Nehru .[8] यन्त्र द्वारा कार्य करना एक तरह की बुराई है । इससे कई लोगों के हाथ से काम छिनकर कुछ ही लोगों के हाथों में आ जाता है। इससे ज्यादा लोग बेकारी के शिकार हो जाते हैं। हमारी समस्या यह नहीं कि भारतवर्ष के गाँव में रहने वाले करोड़ों लोगों को किस प्रकार काम से फुर्सत मिले। समस्या यह है कि किस प्रकार उनके बेकार समय को उपयोग में लाया जाए। चाहे यह बात आश्चर्यजनक क्यों न लगे प्रत्येक मशीन या यन्त्र का कारखानों गाँव वालों के लिए मुश्किलें पैदा कर देगा। वर्तमान दौर में देखा भी जा रहा है एक ओर तो औद्योगिकीकरण तीव्र गति से हो रहा है वहीं दूसरी ओर लाखों किसान आन्दोलन के लिए उग्र हो रहे हैं, जिसकी सम्भावना गांधी जी ने कई वर्ष पूर्व ही जता दी थी। किसानों का कृषि कार्य में ट्रेक्टर, डीजल, फसल बाजार तक पहुंचाने में लागत अधिक आती है और वे उत्पादित

फसल से उस लागत को ही चुका पाने में असमर्थ होते हैं। इसीलिए रोजगार गारण्टी में भी मशीनों के प्रयोग पर पूर्णतः पाबन्दी है।

गांवों का जीवित रहना तब तक ही सम्भव है जब तक वहां के किसानों का शोषण न हो। बड़े पैमाने में कारखानों के खुलने से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांव वासियों का शोषण पुनः प्रारम्भ हो जाएगा ग्रामीण भारत के विकास हेतु कृषि का विकास, कृषि पर आधारित कुटीर उद्योगों का विकास किया जाना चाहिए। भारत के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने वाले एक हाड़–मांस के ढाँचे के रूप में जिस व्यक्ति ने दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद चम्पारन आन्दोलन से देश प्रेम की अलख व स्वतन्त्रता प्राप्ति की ज्योति को जलाया उसकी महानता, आध्यात्मिकता का ही प्रभाव है कि न्यायिक स्थलों, कार्य स्थलों में न्याय की देवी के समान ही महात्मा गांधी का चित्र भी टंगा होता है। गांधी जी के विचारों का ही प्रभाव रहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पंचायती राज व्यवस्था पर विशेष बल दिया गया और पंचायतीराज एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रम को प्रारंम्भ किया गया । इसके तहत खंड को इकाई मानकर खंड के विकास हेतु सरकार कर्मचारियों के साथ सामान्य जनता का भी विकास हो।[9] ''चल पड़े जिधर दो डग–मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर'' एकता में सबसे बड़ी शक्ति निहित है। उनका मानना था कि पवित्र कार्य की ओर अगर हम अग्रसर हो रहे हैं, तो तुम भीड़ को नहीं बुलाओगे बल्कि वह भीड़ एक समूह बनकर तुम्हारे पीछे आयेगी।

जब डांडी यात्रा के दौरान देश के पुरूष ,स्त्री बालक सब में जोश उमड़ आया तब गांधी जी ने कहा यह सब इस बात का द्योतक है कि भगवान हमारे साथ आया है। इस यात्रा की एक सभा में गांधी जी ने कहा सफलता उच्च कुशलता में निर्भर नहीं रहती बल्कि यह केवल मात्र भगवान के ऊपर आधारित रहती है और भगवान का आशीर्वाद उसी को प्राप्त होता है जो सजग होता है और विनयपूर्ण होता है। अपनी सफलता को वे भारत के लोगों में देखते थे। भगवान पर विश्वास करें, हम जिस पथ पर बढ़े हैं उसमें सफलता प्राप्त कर सकते हैं। राम शब्द सदैव गांधी जी के मुख में रहता था । मरते समय भी उनके मुख में दो शब्द थे 'हे–राम' उनका राम केवल हिन्दू धर्म के धनुषधारी सीतापति राम नहीं बल्कि वे अल्ला को, ईशू को भी राम कहकर पुकारते थे। धर्म से गांधी जी का अभिप्राय संकुचित औपचारिक या साम्प्रदायिक धर्म नहीं है। यह हिन्दुत्व ,इस्लाम और ईसाईयत आदि से परे है ।[10]

गांधी जी का विचार था कि अपने दुश्मनों को भी गले लगायें। उनका यह दृष्टिकोण मानवीय तत्वों पर आधारित था। भारत की सीमाओं पर बार–बार चीन एवं पाकिस्तान ने आक्रमण किया है। इसके बावजूद भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ पंचशील के सिद्धान्तों का पालन करते हुए आपसी सौहार्द बढ़ाने की बात करता है और सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम' का अनुसरण कर रहा है। इन महापुरूषों के आदर्शों का ही परिणाम है कि आज भारत ने विश्व के नक्शे में अपना स्थान बनाया है। विश्व गुरू के रूप में आज वह सम्पूर्ण विश्व के सामने है। गांधी जी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस एवं उनकी पुण्यतिथि 30 जनवरी को शहीद दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाता है। कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को गांधी जी ने विकसित किया है। गांधीजी एक अराजकतावादी राजनीतिक विचारकों में माने जाते हैं जो राज्य को नागरिकों के शोषण का साधन मानते हैं। फिर भी उन्होंने राज्य द्वारा किये जाने वाले कार्यों के लिए आवश्यक माना कि वे नागरिक हित में ही किये जायें। अधिक से अधिक योजनाओं को ग्राम विकास एवं विकेन्द्रीकरण के रूप में होना चाहिए। इन सभी विचारों का समावेश वर्तमान विकासवादी समाज में किया जा रहा है। नागरिकों में विकास हेतु मौलिक अधिकार दिए गये हैं तथा सभी नागरिकों के हित हेतु कुछ बन्धनों का भी समावेश किया गया है।

किसी भी माँग की पूर्ति हेतु सत्याग्रह सबसे अच्छा साधन है। गांधी जी ने भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु तीन प्रमुख आन्दोलन– असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं भारत छोड़ो आन्दोलन चलाए। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान भी उन्होंने 'करो या मरो' का नारा अवश्य दिया था परन्तु उन्होंने कहा था किसी भी रूप में आन्दोलन हिंसक नहीं होना चाहिए। वर्तमान में भी कई कृषक, मजदूर, शिक्षक, या फिर छात्र आन्दोलन गांधीवादी मार्ग को ही अपनाते हैं, जिसमें धरना या फिर कार्य बहिष्कार सम्मिलित है। इस तरह के आंदोलनों को अपनी मांगें मनवाने में सफलता भी प्राप्त हुयी है। गांधी जी के अनुसार अपनी बात को मनवाने हेतु राष्ट्रीय व सार्वजनिक सम्पत्ति को किसी भी रूप में क्षति नहीं पहुँचाया जाना चाहिए। इससे अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को ही क्षति पहुँचती है।

गांधी जी का मत था कि आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण ऐसे जनतन्त्र का निर्माण करती है। जिसमें व्यक्ति की सच्ची स्वतन्त्रता रह सकती है। ग्रामों को अपनी पंचायतों के कार्यों का प्रबन्ध एवं प्रशासन नियन्त्रण की अधिक से अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो। 'देवी, माँ, सहचरि, प्राण' इतने रूपों में स्त्री का सम्मान किया

जाता था।[11] उनके अनुसार स्त्री को अबला कहना उसका अपमान करना है। पुरूष उसे अबला कहकर उसके साथ अन्याय करता है। यदि शक्ति का अर्थ पाशविक शक्ति है तो पुरूष की अपेक्षा स्त्री में निःसंदेह कम पशुता है किन्तु यदि शक्ति का अर्थ नैतिक शक्ति है तो पुरूष की अपेक्षा स्त्री निश्चित रूप से अधिक शक्तिशाली है।[12] वैश्यावृत्ति को जीवन यापन करने वाली महिलाओं को भी सम्मानजनक जीवन जीने हेतु प्रोत्साहित किया। वर्तमान में वैश्यावृत्ति से महिलाओं की सुरक्षा संबंधी कानून भी लागू हो चुका है। भारतीय समाज प्रत्येक दौर में किसी न किसी सामाजिक बुराई से अवश्य ग्रसित रहा है और उनका एवं बालविवाह का खुलकर विरोध किया। आज महिलाओं को कई विधिक अधिकार प्राप्त हैं, जिससे वे अपने हितों का संरक्षण कर सकती हैं। कई क्षेत्रों में पर्दाप्रथा व बाल विवाह वर्तमान में भी है परन्तु इनकी संख्या पहले की अपेक्षा कम है। शोषण से स्वयं की रक्षा हेतु महिलाओं के विधिक अधिकार, न्यूनतम मजदूरी, प्रसूति संबंधित विशेष सुविधाएं, हिन्दुओं में महिला द्वारा तलाक प्राप्त करने का अधिकार, बाल विवाह रोकने हेतु बाल विवाह अधिनियम बना है। जिसके तहत 18 वर्ष से कम उम्र की लड़की और 21 वर्ष से कम उम्र के लड़के का विवाह करना दण्डनीय अपराध है। महिलाओं के हित में आवाज गांधीजी ने पूर्व में ही उठा दी थी। परन्तु वे किसी धर्म व जाति विशेष से परे थे।"I am not anti-English; I am not anti-British; I am not anti-any Government;but I am anti-untruth,anti-humbug and anti-anjustice,"[13] प्रत्येक व्यक्ति समाज में जीवन निर्वाह करने हेतु किसी न किसी कार्य में सलंग्न रहता है। गांधी जी के अनुसार प्रत्येक कार्य अपने आप में पवित्र है। एक वेद पढ़ने वाले का कार्य उतना ही पवित्र है जितना कि एक चमड़े का कार्य करने वाले का कार्य। स्वरोजगार को अपनाते हुए किसी भी व्यक्ति को अपने पैतृक कार्य को अपनाने में शर्म नहीं होनी चाहिए। वर्तमान में भी भारतीय नागरिकों को स्वरोजगार हेतु ऋण उपलब्ध कराया जाता है। ग्रामीण कुटीर उद्योगों एवं तैयार उत्पादों के विपणन की व्यवस्था भी कई संस्थाओं द्वारा व राज्य द्वारा की जाती है जिससे ग्रामीण समाज में आर्थिक आत्मनिर्भरता का विकास उच्च स्तर पर हुआ। सब व्यक्तियों को सब आवश्यक वस्तुओं के समान उपभोग के लिए अपने अहिंसात्मक समाज में आर्थिक विषमता के स्थान पर आर्थिक समानता का प्रतिष्ठान किया है।[14] वर्तमान में आवश्यक वस्तु अधिनियम लागू है। गैस की काला बाजारी से वर्तमान में कोई अनजान नही है। आवश्यक रसोई गैस की पहुँच सभी तक सुनिश्चित करने हेतु वर्तमान में एक उपभोक्ता एक कनेक्शन का अनुसरण करते हुए सभी रसोई एवं व्यावसायिक गैस कनेक्शनों का सत्यापन आवश्यक किया गया है।

शिक्षा किसी भी समाज में परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम है। गांधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शरीर, बुद्धि एवं आत्मा का विकास करना है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक है। कक्षा 1 से कक्षा 5 तक की शिक्षा हेतु गांधी जी ने विचार प्रदान किया कि बुनियादी शिक्षा दस्तकारी पर आधारित हो एवं मातृभाषा द्वारा प्रदान की जानी चाहिए। दस्तकारी पर आधारित शिक्षा प्राप्त करने से बालक स्कूली शिक्षा खत्म होने पर बेरोजगार नहीं होगा ओर मातृभाषा को आधार बनाकर शिक्षा देने से वह इसे आसानी से ग्रहण कर लेगा। वर्तमान में पाठ्क्रम मे त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत तीन भाषाओं में एक भाषा के रूप में मातृभाषा को भी स्थान दिया गया है।

मद्य निषेध हेतु गांधी जी ने गॉजा, चरस, अफीम, शराब आदि मादक वस्तुओं के प्रयोग को उन दुर्व्यसनों की सूची में स्थान दिया जो मानव को दुर्वासना का दास बना देते हैं।[15] नशाखोरी का विरोध करते हुए गांधी जी ने कहा है कि यह समाज को धीरे–धीरे समाप्त कर देती है। नशे की बीमारी अनेक बुराइयों को जन्म देती है। स्वयं व्यक्ति का परिवार फिर समाज और फिर राष्ट्र का नाश इससे होता है। वर्तमान में भी अनेक नशीले पदार्थों पर पूर्णतः प्रतिबन्ध है और सिगरेट व कुछ तम्बाकू उत्पादों पर वैधानिक चेतावनी लिखी जानी आवश्यक है।[16]

किसी की जान बचाने हेतु बोला गया झूठ गलत नहीं माना जा सकता । गांधीजी ने सत्य व अहिंसा का मार्ग अपनाया एवं दूसरों को भी इस मार्ग में चलने हेतु प्रेरित किया। परन्तु उनका मानना था कि प्रत्येक परिस्थिति में सत्य भी नहीं बोला जा सकता। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति अपने देश के सैन्य रहस्यों को दुश्मन देशों को बताकर देश की सुरक्षा व्यवस्था को खतरे में डाल दे तो ऐसा सत्य पवित्र सत्य नहीं माना जा सकता। कोई भी कार्य जो मनुष्य द्वारा किया जाता है। उसमे सम्पूर्ण मानव समाज का हित समाहित होना चाहिए, व्यक्तिगत स्वार्थ को त्याग देना आवश्यक है। गांधी जी को आधुनिक युग का असाधारण पुरूष प्रगाढ़ देश–प्रेमी, महान राष्ट्रीय नेता ,श्रेष्ठ समाज–सुधारक एवं उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ माना जाता है। स्टेनले जोन्स ने कहा है ''हत्यारे की गोलियॉ महात्मा गांधी और उनके विचारों का अन्त करने के लिए चलायी गयी थी किन्तु उनका परिणाम यह हुआ कि वे विचार स्वच्छन्द हो गये ओर मानव जाति के थाती बन गये। हत्यारे ने महात्मा गांधी की हत्या करे उनको अमर बना दिया है।'' उन्होंने राजनीतिक, आर्थिक एवं नैतिक दृष्टियों से व्यक्तियों में किये जाने वाले भेदभाव को अन्याय

माना है।[17] "Generations to come, will scarce believe that such a one as this ever in flesh and blood walked upon this earth." This was the tribute the greatest Scientist of our age paid to the Mahatma on his martyradom..[18] अनेक ऐसी बातें हैं जो महात्मा गांधी को उनके समकालीन स्वतंत्रता सेनानियों तथा नेताओं से अलग करती है। इस दौरान भी उन्होंने समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया। वे जिस आजादी से लड़ रहे थे उसका अर्थ केवल राजनीतिक आजादी से नहीं था। उनके लिए आजादी का तात्पर्य था कि देश के प्रत्येक नागरिक को वास्तविक आजादी प्राप्त हो। एक ऐसी आजादी जो केवल मौलिक समानता और प्रत्येक नागरिक की गरिमा की रक्षा के जरिये आ सकती है। अस्पृश्यता निश्चय ही इस उद्देश्य में बाधक है।[19]

गांधीवादी विचारों की जो महत्ता आज से 50 वर्ष पूर्व रही वह आज और अधिक प्रासंगिक हो गयी है। समय परिवर्तन होगा, व्यवहार परिवर्तित होंगे, लोग आएंगे और जाएंगे परन्तु प्रत्येक समाज में गांधीवादी विचारों की सार्थकता उनकी सुदृढ़ता समाज को, राष्ट्र का, एवं विश्व को नई दिशा प्रदान करेगी क्योंकि महापुरूष कभी मरते नहीं वे अपने विचारों के रूप में सदैव जीवित रहते हैं। गांधी जी तो महापुरुष ही नहीं युगपुरुष थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1 अवस्थी डॉ0 ए0 पी0, भारतीय राजनीतिक विचारक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, नवरंग ऑफसेट प्रिटर्स, 2009–10 पेज 225

2 मास्टर इन करेन्ट अफेयर्स, नवम्बर, 2007 महेन्द्र प्रिटिंग प्रेस बी–24सेक्टर ए, महानगर लखनऊ, उ0 प्र0, पेज 10

3 अवस्थी, वही पेज 222

4 नयाल इन्द्र सिंह, स्वतंत्रता संग्राम में कुमाऊँ का योगदान, श्रमिक प्रेस कोपरेटिव इण्डस्ट्रियल सोसाइटी लिमिटेड, जिन्दल ऑयल बिल्डिंग, शाहदरा दिल्ली–32 1973 पेज 52

5 अवस्थी, वही पेज 230

6 वही पेज 216

7 वही पेज 215

8 Mahatma Gandhi Centenary Diary Reliable Surgical Co. , 6 Balmiki Marg Lal Bagh Lucknow 1969

9 सविल सर्विसेज क्रानिकल, वैल्यू एडिशन, स्पेशल–8 2010 पेज 36

10 अवस्थी, वही पेज 210

11 वही पेज 229

12 वही

13 Mahatma Gandhi Centenary Diary Reliable Surgical Co. ,6 Balmiki Marg Lal Bagh Lucknow Published V.P. Seth at Asia Press delhi 1969

14 अवस्थी, वही पेज 233

15 वही 229

16 क्रानिकल प्रतियोगिता पत्रिका जुलाई 2011 अंक 12 पेज 51

17 अवस्थी, वही पेज 223

18 Mahatma Gandhi Centenary Diary Reliable Surgical Co. ,6 Balmiki Marg Lal Bagh Lucknow 1969

19 खान आमिर, लेख समानता का अधूरा सपना, उदृत दैनिक जागरण, नैनीताल, 9 जुलाई 2012